

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2021

एम.एच.डी.-10 : प्रेमचंद की कहानियाँ

समय : 2 घण्टे

अधिकतम अंक : 50

नोट : प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो की सन्दर्भ-सहित व्याख्या कीजिए :

2×10=20

(क) रूपमणि ने आवेश में कहा – अगर स्वराज्य आने पर भी सम्पत्ति का यही प्रभुत्व रहे और पढ़ा-लिखा समाज यों ही स्वार्थान्ध बना रहे, तो मैं कहूँगी, ऐसे स्वराज्य का न आना ही अच्छा। अंग्रेज़ी महाजनों की धन-लोलुपता और शिक्षितों का स्वहित ही आज हमें पीसे डाल रहा है। जिन बुराइयों को दूर करने के लिए आज हम प्राणों को हथेली पर लिए हुए हैं, उन्हीं बुराइयों को क्या प्रजा इसलिए सिर चढ़ायेगी कि वे

विदेशी नहीं, स्वदेशी हैं ? कम-से-कम मेरे लिए तो स्वराज्य का यह अर्थ नहीं है कि जॉन की जगह गोविन्द बैठ जायँ । मैं समाज की ऐसी व्यवस्था देखना चाहती हूँ, जहाँ कम-से-कम विषमता को आश्रय न मिल सके ।

(ख) दोनों ने जैसे बड़े धर्मसंकट में पड़कर गहनों की पिटारी सँभाली और चलते बने । माता वात्सल्य-भरी आँखों से उनकी ओर देख रही थी, और उसकी सम्पूर्ण आत्मा का आशीर्वाद जैसे उन्हें अपनी गोद में समेट लेने के लिए व्याकुल हो रहा था । आज कई महीने के बाद उनके भग्न मातृ हृदय को अपना सर्वस्व अर्पण करके जैसे आनन्द की विभूति मिली ।

(ग) इस प्रकार तीन मास बीत गये और असाढ़ आ पहुँचा । आकाश में घटाएँ आर्यीं, पानी गिरा, किसान हल-जुए ठीक करने लगे । बढ़ई हलों की मरम्मत करने लगा । गिरधारी पागल की तरह कभी घर के भीतर जाता, कभी बाहर आता, अपने हलों को निकाल-निकाल देखता; उसकी मुठिया टूट गयी है, इसकी फाल ढीली हो गयी है, जुए में सैला नहीं है । यह देखते-देखते वह एक क्षण अपने को भूल गया । दौड़ा हुआ बढ़ई के यहाँ गया

और बोला – रज्जू मेरे हल भी बिगड़े हुए हैं, चलो बना दो । रज्जू ने उसकी ओर करुणाभाव से देखा और अपना काम करने लगा । गिरधारी को होश आ गया, नींद से चौंक पड़ा । ग्लानि से उसका सिर झुक गया, आँखें भर आयीं । चुपचाप घर चला आया ।

(घ) अगर ईश्वर ने उन्हें वाणी दी होती, तो झूरी से पूछते – तुम हम गरीबों को क्यों निकाल रहे हो ? हमने तो तुम्हारी सेवा करने में कोई कसर नहीं उठा रखी । अगर इतनी मेहनत से काम न चलता था और काम ले लेते । हमें तो तुम्हारी चाकरी में मर जाना कबूल था । हमने कभी दाने-चारे की शिकायत नहीं की । तुमने जो कुछ खिलाया, वह सिर झुकाकर खा लिया, फिर तुमने हमें इस जालिम के हाथ क्यों बेच दिया ?

2. प्रेमचंद की राष्ट्रवाद विषयक दृष्टि का परिचय दीजिए । 10
3. 'कफन' कहानी की मूल संवेदना को स्पष्ट कीजिए । 10
4. 'नमक का दारोगा' का मंतव्य स्पष्ट कीजिए । 10
5. 'सवा सेर गेहूँ' का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए । 10
6. प्रेमचंद की कहानी-कला के मूल तत्त्वों को स्पष्ट कीजिए । 10

7. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : $2 \times 5 = 10$

(क) प्रेमचंद की नारी विषयक दृष्टि

(ख) 'जुलूस' कहानी का प्रतिपाद्य

(ग) 'सुजान भगत' में व्यक्त द्वन्द्व

(घ) प्रेमचंद और दलित जीवन
